VIP(1) [illegible] कई लोग पड़े हैं सब गिरने लगेंगे

प्रातःक्लास VIP कुर्सी ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है? 15.3.00

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। मीठे2 बच्चे जानते हैं हंस और बगुले भी कहलाते हैं। यह ल0ना0 हंस हैं। इन जैसा बनना है। तुम कहेंगे हम देवी सम्प्रदाय बन रहे हैं। बाप कहेंगे तुम दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो। मैं तुमको बगुले सम्प्रदाय से हंस सम्प्रदाय बनाता हूं। अभी पूरे बने नहीं हो। बनना है। इम्तहान में अभी देरी है। हंस मोती चुगते हैं, बगुले गन्द खाते हैं। अभी हम हंस बन रहे हैं। बने नहीं हैं। इसलिए देवताओं को फूल कहा जाता है। और उनको कांटा कहा जाता है। तुम हंसे थे फिर नीचे उतरते2 बगुले बने हो। हंस बनने में भी माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। कुछ न कुछ गिरावट आ जाती है। गिरावट आती है देह-अभिमान की। इस संगम पर ही अब चेंज होना है। तुम जब हंस बन जाते हो तो हंस ही हंस हो। फिर आधा कल्प बाद बगुले बन जाते हैं तो बगुले ही बगुले होते हैं। रचना की बगुलों की है। विकार से पैदा होते हैं ना। हंस अर्थात देवी-देवताएं होते हैं नई दुनिया में। पुरानी दुनिया में एक भी हंस हो न सके। मल सन्यासी हैं परन्तु वह भी हद के सन्यासी हैं ना। तुम हो बेहद के सन्यासी। बाबा ने दो प्रकार का सन्यास भी समझाया है। इन देवताओं को सर्व गुण सम्पन्न ... और कोई धर्म वाला बनता ही नहीं है। अभी बाप आकर आदी-सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। तुम ही नई दुनिया में पहले2 सुख में आते हो। और कोई नई दुनिया में थोड़े ही आते हैं। अभी इन देवताओं का धर्म ही प्रायः लोप है। यह बातें भी अभी तुम सुनते हो। समझते हो। और कोई समझ न सके। एक देशीय, फ्लाना देशीय क्या2 कहते रहते। वह सभी हैं मनुष्य मत। बगुला मत। विकार से तो सभी पैदा होते हैं। सतयुग में विकार की बात नहीं। देवताएं पवित्र थे। वहां योग से ही सब कुछ होता है। यहां के बगुलों को क्या पता वहां बच्चे आदि कैसे पैदा होते हैं। उनका नाम ही है वायसलेस वर्ल्ड। विकार की बात ही नहीं। कहेंगे जनावर आदि कैसे पैदा होते हैं। बोलो वहां है ही योगबल। विकार की बात ही नहीं। 100% वायसलेस है। हम तो शुभ बोलते हैं। तुम अशुभ क्यों बोलते हो। उनका नाम ही है शिवालय। उस सतयुग की स्थापना शिव बाबा कर रहे हैं। शिव बाबा ऊंचे ते ऊंचे टावर है ना। शिवालय भी ऐसी लम्बी बनाते हैं। तुमको सुख के टावर में ले जाते हैं। इसलिए बाबा में बहुत लव रहता है। भक्तिमार्ग में भी शिव बाबा के साथ लव रहता है। शिव के मंदिर में बहुत ही प्यार से जाते हैं। परन्तु यह पत्थर बुधि कुछ समझते थोड़े ही हैं। अपनको पत्थर बुधि समझते थोड़े ही हैं। तो अब तुम बच्चे सर्व गुण सम्पन्न ... बन रहे हो। बने नहीं हो। तुम्हारा इम्तहान तब होगा जब तुम्हारी राजधानी पूरी स्थापन हो जावेगी। फिर और धर्म खत्म हो जावेंगे। फिर नम्बरवार थोड़े आते जावेंगे। तुम्हारी तो पहले राजाई शुरू होती है। और धर्म में पहले राजाई नहीं होती है। तुम्हारी तो है किंगडम। इन बातों को तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं तो समझते हैं। कोई तो 5% भी हंस नहीं बने हैं। बगुले ही हैं। वह किसको क्या समझाये सकेंगे। बनारस में सर्किट पर गये उनको समझाने का नशा है ना। परन्तु यहलोग इतने में समझ न सके। गायन भी है कोटों में कोई हंस कोई विरले ही होते हैं। न बनते हैं तो फिर बहुत सज़ाएं खाते हैं। कोई 95% भी खाते हैं। सिर्फ 5% चैन होते हैं। हाईएस्ट और लोएस्ट नम्बरवार तो होते हैं ना। अभी कोई भी अपने को हंस कह न सके। पुरुषार्थ कर रहे हैं। जब ज्ञान पूरा हो जावेगा फिर तो बाबा भी चले जावेंगे। फिर लड़ाई भी लगेगी। ज्ञान तो पूरा हुआ ना। वह लड़ाई भी फाईनल होगी। अभी तो अजन कोई भी 100% बने नहीं हैं। बहुत टाईम पड़ा है। अजन तो घर2 में मनुष्य को पैगाम पहुंचाना है। पूरा भारत रोकलेशन हो जावेगा। जिन्हों के बड़े2 अड्डे बने हुये हैं सब हिलने लग पड़ेंगे। भक्ति का तख्त हिलेगा ना। अभी तो भक्तों का राज्य है ना। उस पर तुम विजय पाते हो। अभी है प्रजा का प्रजा पर राज्य। फिर बदली होगा, इन ल0ना0 का राज्य होगा। तुम सा0 करते रहेंगे। शुरू में तुमको बहुत सा0 किये हुये हैं। कैसे राजधानी चलती है। सा0 करने वाले भी हैं नहीं। यह ड्रामा में जिसको जो पार्ट है वह चलता आया है। ऐसे नहीं बाप की कोई महर है। नहीं बाप तो ड्रामा में बांधा

हुआ है। पतित से पावन बनाने का उनका पार्ट है। हम महिमा थोड़े ही करेंगे। यह तो उनकी डियुटी है। पतित से पावन बनाने का। टीचर का डियुटी है ना पढ़ाने की। अपनी डियुटी बजाने वाले की महिमा क्या करेंगे। पार्ट है ना। बाप कहते हैं मैं भी ड्रामा के वश हूं। उन में फिर ताकत काहे का। यह तो उनकी डियुटी है। कल्प3 संगम पर आकर पतित को पावन बनाने का रास्ता बताना ही है। मैं पावन बनाने बिगर रह नहीं सकता हूं। मेरा पार्ट ही बिलकुल स्क्यूरेट है। एक सेकण्ड भी देरी से वा आगे नहीं हो सकता। बिलकुल स्क्यूरेट टाइम पर सर्विस बजाता हूं। सेकण्ड व सेकण्ड जो पार्ट होता है ड्रामा मेरे से कराती रहती है। मैं प्रवस हूं। इसमें महिमा की बात ही नहीं। उन बगुलों की कितनी महिमा करते हैं। कितना मान रखते हैं। मेरी तो महिमा की बात नहीं। मैं कल्प2 आता हूं। बुलाते ही हैं मुझे कि पतित से पावन बनाने आओ। कितने पतित हैं। एक एक अवगुण छुड़ाने में कितनी मेहनत लगती है। 10 वर्ष पवित्र रहते2 रह कर चलते2 फिर माया का थप्पर लगने से काला मुंह कर देते हैं। कहते हैं बाबा काला मुंह कर दीया। अपनी भी किया तो उनकी भी किया। काला मुंह तो दोनों का होता है ना। अक्सर कर के पुरुष ही गिरते हैं। तब तो द्रौपदी ने पुकारा है हमको नंगन करते हैं। नंगन तो सभी करते हैं ना। सन्यासी भी जन्म विकार से ही लेते हैं ना। कोई भी ज्योति-ज्योत वा वापस जा नहीं सकता। आत्मातो अविनाशी है उनका पार्ट भी अविनाशी है। फिर ज्योति-ज्योत में समा कैसे सकें। जितने ढेर मनुष्य हैं उतनी ढेर बातें हैं। वह सब हैं मनुष्य मत। ईश्वरीय मत है ही एक। देवता मत तो यहां होती नहीं। देवतायें होते ही हैं सतयुग में। तो यह बड़ी समझने की बातें हैं। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। तब ही तो ईश्वर को पुकारते हैं। रहम करो। यह करो। बाप कहते हैं अभी मैं तुमको ऐसा लायक बनाता हूं। जो तुम पूजने लायक बनते हो। अभी थोड़े ही पूजने लायक हो। बन रहे हो। तुम जानते हो हम यह बनेंगे फिर भक्ति-मार्ग में हमारे ही मंदिर बनेंगे। तुमको मालूम है चण्डीका देवी का भी मेला लगता है। चण्डकायें भी हैं ना। जो बाप के श्रीमत पर नहीं चलते हैं। बाप के बच्चे आज्ञाकारी नहीं होते हैं तो उनको चण्डाल कह देते हैं। तो चण्डीका देवियों का भी मेला लगता है। फिर भी विश्व को पवित्र बनाने कुछ न कुछ मदद तो करते हैं ना। सेना तो है ना। सज़ायें खाकर फिर भी विश्व का मालिक तो बनते हैं ना। यहां भी कोई भील होगा वह कहेगा तो सही ना हम भारत के मालिक हैं। आजकल तो देखो एक तरफ यात्रा रहते हैं भारत हमारा सब से ऊंच देश है। वहतो रहती.... एक रिकार्ड महिमा तो एक रिकार्ड में निन्दा.... समझते कुछ थोड़े ही हैं। तुमको तो अभी यथार्थ रीति बाप बैठ समझाते हैं। उन बगुलों को यह थोड़े दीखता है कि इन्हों को भगवान पढ़ाते हैं। कहेंगे वाह इन्हों ने तो भगवानको टीचर बना रखा है। अरे भगवानुवाच है ना मैं तुमको राजाओं का राजा बनता हूं। सिर्फ गीता में मनुष्य का नाम डाल गीता को ही खण्डन कर दिया है। कृष्णभगवानुवाच, यह तो मनुष्य मत हो गई। कृष्ण यहां कैसे आयेगा। वह तो सतयुग का प्रिन्स था। उनको क्या पड़ी जो पतित दुनिया में आवे। बातें तो ऐसी2 करते हैं अरे जंगली लोग। बाप कहते हैं यह जंगल के बड़े2 कांटे हैं। जिन्हों ने गुरु बन सब को नीचे ही गिराया है। जरा भी जानते नहीं। बाप को तो तुम बच्चे ही जानते हो। तुम्हारे में भी कोई विरला ही यथार्थ रीति जानते हैं। बुद्धि से सदैव रत्न ही निकले। पत्थर नहीं। अपने से पूछना चाहिए हम ऐसे बने हैं। मंजिल चाहते हैं जल्दी होवें-हम कपड़े से बाहर निकलें। परन्तु जल्दी ही न सके। टाईम लगता है। तुमको बहुत मेहनत अभी ही करनी है। देखना है हम साधू, सन्यासियों आदि से लड़ सकते हैं? समझाने वालों में भी नम्बरवार तो हैं ना। युक्ति-युक्त समझाने वाले पिछाड़ी को हैं। तब तुम्हारी बाण भी चलेगी। अभी तक तो कोई कह न सके कि हम हंस बने हैं। बहुत फर्क है। तुम जानते हो हमारी पढ़ाई अजब चलेगी। पढ़ाने वाला तो एक ही है। हम सब हैं उन से पढ़ने वाले। अभी सम्पूर्ण कोई भी बना नहीं है। अभी कोई कर्मातीत अवस्था

ो पाये न सके। जब तक वह समय न आवे। आगे चल तुम लड़ाई देखेंगे बात मत पूछो। लड़ाई में तो बहुत मरेंगे। हज़ारों मनुष्य मरते हैं। फिर इतनी सब आत्मायें कहां जावेंगी? क्या फट से जाकर जन्म लेती है? हां। अभी तो बहुत आने वाले हैं। झाड़ बड़ा होता जाता है। बहुत टार, टार्रिया पत्ते हो जाते हैं। रोज़ कितने जन्म लेते हैं। लड़ाईमें , अर्धशेक आद में करोड़ों मनुष्य मरते हैं। वापस तो कोई भी जा न सके। कैसे जाकर जन्म लेते हैं, कहां तो 45- 4-5 भीघूस पड़ते हैं। मनुष्यों की वृधि होती जाती है। बच्चों के लिए फिर क्या भातायें भी बहुत चाहिए। इन बातों की जास्ती रेजकारी में जाने से पहले हम अपने बाप को याद तो करें जिससे किसी विनाश हो। वह कचड़ा तो निकल जावे। पीछे दूसरी बात। तुम उसका कोई विचार न करो। पहले अपनी पेट की पूजा तो पूरी करो जो तुम ऐसा बन सको। वह है मुख्य याद की यात्रा। सभी को पैगाम देना है। पैगम्बर एक ही है। धर्मस्थापक को भी पैगम्बर वा प्रीसेप्टर नहीं कह सकते। सदगति दाता एक ही सदगुरु है। और कोई है नहीं। बाकी भक्ति-मार्ग में मनुष्य कुछ न कुछ सुधरते हैं। यह भी कहते हैं नाथ, नाथ में एक बार विकार में जाओ, । कोई न कोई दान भी लेते हैं। तीर्थों पर मनुष्य जाते हैं तो कुछ न कुछ दान में दे आते हैं। अभी यह तो तुम बच्चे समझते हो सतयुग है देवों की दुनिया। यह है बगुलों की दुनिया। बगुले देवी हैं? पारसी लोग में कोई मरता है तो कुआं पर ले जाते हैं। वहां बगुले सारा मांस खा जाते हैं। हड्डियां रह जाती है .... मनुष्यों की तो हड्डी भी काम नहीं आती। कुछ भी मनुष्य का काम नहीं आता। इसलिए बेकाम कहा जाता है। मनुष्य बहुत काम का भी है तो बेकाम का भी है। हीरे जैसा बनता है तो कोड़ी जैसा भी बनता है। इस अन्तिम जन्म में बाप तुमको कोड़ी से हीरे जैसा बनाते हैं। इनको ही अमूल्य जीवन कहा जाता है। परन्तु इतना पुरुषार्थ भी करना पड़े। तुम कहेंगे हमारा कोई दोष नहीं है। अरे मैं आया हूं गुल2 बनाने तो क्यों नहीं बनते हो। मैंने तो ड्यूटी ले प्रजा बनाने की। तुम पुरुषार्थ क्यों नहीं करते हो। पुरुषार्थ कराने वाला बाप मिला है। इन लक्ष्मी को ऐसा किसने बनाया। दुनिया थोड़े ही जानती है। कैसे विश्व के मालिक बने गये। कलियुग में हाथ दोस लगा पड़ा है। बाप आते ही हैं संगम पर। अभी तुम्हारे बातों को कोई समझते नहीं हैं। आगे चल कर सब तुम्हारे पास बहुत आवेंगे। उन्हों के ग्राहक टूट पड़ेंगे। तब ही उन्हों का दिमाग ठीक होगा। बाप कहते हैं मैं इन वेदों-शास्त्रों सब का सार मैं सुनाता हूं। ढेर के ढेर गुरु हैं। भक्ति मार्ग के सब नीचे गिराने वाले ही हैं। सतयुग में पावन थे। फिर पतित किसने बनाया? ड्रामा अनुसार भक्ति-मार्ग के गुरुओं ने। अभी बाप आकर फिर तुमको वेहद का सन्यास कराते हैं। क्योंकि यह पुरानी दुनिया ही खत्म हो जानी है। सन्यासियों के टाईम तो पुरानी दुनिया खत्म होती नहीं है। पुरानी दुनिया को तो अभी खत्म हो जानी है। इसलिए बाप कहते हैं कब्रस्थानियों से बुधि निकाल मुझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। अभी क्यामत का समय है। सब का हिसाब-किताब चुक्तु होना है। सारी दुनिया के जो आत्मायें हैं उन में सारा पार्ट भरा हुआ है। आत्मा शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। आत्मा भी अविनाशी है तो पार्ट भी अविनाशी है। उसमें कोई फर्क नहीं पड़ सकता। हू बहू रिपीट होता रहता है। यह बहुत बड़ा वेहद का ड्रामा है। तुम भी अभी समझते हो। नम्बरवार तो होते हैं ना। कोई स्थानी सर्विस करने वाले, कोई स्थूल काम करने वाले। कोई कहते हैं बाबा हम आप का ड्राईवर बनूं तो वहां भी विमान का मालिक तो बन जाऊंगा। आजकल यहां के बड़े2 आदमी समझते हैं अभी तो हमारे लिए स्वर्ग है। बड़े2 महल हैं। विमान है, वस्तुयें हैं। बापकहते हैं यह सब आर्टीफीशियल। इनको माया का पम्प कहा जाता। क्या2 सीखते रहते हैं। जहाज़ बनाते हैं। अब जहाज़ वहां थोड़े ही काम आवेंगा। बम्ब बनाते हैं वह थोड़े ही काम में आवेंगा। सुख वाली चीज़ें काम आवेंगी। विनाश में यह सुख सांय मदद करते हैं। फिर वही सांयंस तुमको सुख भी देंगे। यह ड्रामा बना वेहद फुल बना हुआ है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति स्थानी बापदादा का याद प्यार गुडमोर्निंग। नमस्ते।